विस्तार पत्रक भा.कृ.अनु.प. /रा.उ.अ.के /2018 /02

पर्यावरणीय पर्यटन
ऊँट व्यवसाय का नया आयाम

लेखक गण

राजेश कुमार सावल, नेमीचंद बारासा,
अविनाश कुमार शर्मा, नितिन वसंतराव पाटिल

भा.कृ.अनु.प.-राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसन्धान केन्द्र
पोस्ट बैग 07, जोड़ बीड़
बीकानेर, राजस्थान

पर्यावरणीय पर्यटन व ऊँट

रेगिस्तान के जहाज 'ऊँट' का स्मरण मात्र आमजन में कौतूहल उत्पन्न करता है तो इसकी सवारी एक रोमांच भरा अनुभव है। ऊँट की सवारी एक जीवंत रेगिस्तान, विहंगम और घुमावदार प्रदेश का आभास करवाती है। सर्दियों के मौसम में, उत्तर पश्चिम भारत में सामान्यतः दिन एवं रात बेहद ठंडे रहते हैं। सर्दियों में ऊँट सफारी के लिए सबसे अच्छा समय सुबह और शाम का होता है। शुष्क क्षेत्र में दर्शनीय स्थलों पर ऊँट की सवारी सैलानियों एवं यात्रियों में काफी लोकप्रिय है। इसका लुत्फ देश के उत्तर–पश्चिमी और उत्तरी शीतोष्ण क्षेत्रों में उठाया जा सकता है। भारत के उत्तर–पश्चिम में राजस्थान का एक बड़ा भू–भाग, जो कि एक मरुप्रदेश है, व कश्मीर के उत्तरी पूर्व में लद्दाख की नुब्रा घाटी शामिल हैं।

उष्ट्र से प्राप्त उत्पाद : उष्ट्र से प्राप्त उत्पादों का प्रचलन पर्यटकों में काफी लोकप्रिय होता जा रहा है जिसमे मुख्यतः उष्ट्र चमड़े से निर्मित वस्तुएं, उष्ट्र हड्डियों से निर्मित उत्पाद व उष्ट्र दूध से निर्मित वस्तुएं हैं। उष्ट्र पर्यटन क्षेत्र में उष्ट्र चमड़े और हड्डियों के उत्पादों की बहुत बड़ी भूमिका है। अधिकतर पर्यटक उष्ट्र चमड़े व उष्ट्र दूध से निर्मित उत्पादों को पसंद करते हैं।

उष्ट्र दुग्ध उत्पाद : भारत के राजस्थान, गुजरात व हरियाणा प्रान्त के ग्रामीण क्षेत्रों में बहुत समय से ऊँटनी का दूध प्रायः चाय, खीर, घेवर के अलावा कच्चा या उबालकर, प्रयोग में लिया जाता है। पिछले कई वर्षों से ऊँटनी के दूध की लोकप्रियता बढ़ाने हेतु राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र सतत प्रयत्नशील है। केन्द्र ने ऊँटनी को एक दुधारू पशु के रूप में स्थापित करने की दिशा में उष्ट्र डेयरी के रूप में महत्वपूर्ण पहल की है। केन्द्र द्वारा ऊँटनी के दूध से विभिन्न दुग्ध उत्पाद –दही, कुल्फी, सॉफ्ट चीज, सुगन्धित दूध, चाय व कॉफी, बर्फी, पेड़ा, लस्सी आदि विकसित किये जा चुके हैं जिनकी आमजन में स्वीकार्यता देखी गई है। अपने आप में अनूठे ये दुग्ध उत्पाद आमजन में जिज्ञासा उत्पन्न करते हैं। केन्द्र इन दुग्ध उत्पादों की अपने मिल्क पार्लर के माध्यम से बिक्री कर रहा है। इस पार्लर की सफलता से समाज में इसके दूध के प्रति जागरूकता भी बढ़ रही है।

उष्ट्र दुग्ध उत्पाद

ऊँटनी के दूध पर शोध : ऊँटनी के दूध पर हुई वैश्विक शोध में यह पाया गया है कि पीलिया, फेटी लीवर, ड्राप्सी, एड्स जैसी खतरनाक बीमारियों में भी यह दूध प्रतिरक्षा तंत्र (इम्यूनो सिस्टम) को मजबूत बनाए रखने में काफी कारगर है। वहीं राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र की वैज्ञानिक शोध में यह दूध मधुमेह, क्षय रोग, ऑटिज्म रोगों के प्रबंधन में कारगर साबित हुआ है।

उष्ट्र चमड़े से बने उत्पाद व उस्ता कला : ऊँट की प्राकृतिक (नैचुरल) मृत्यु के बाद उसके चमड़े से विभिन्न प्रकार के उत्पाद यथा– जूते, लेडीज व जेंट्स के लिए पर्स, बेल्ट, टोपी, हैट, ऊँट की काठी और उससे जुड़ी पट्टियां, पशुओं को नियन्त्रित

करने हेतु चाबुक इत्यादि बनाये जाते हैं। बीकानेर नगर में उष्ट्र चमड़े पर स्वर्ण मीनाकारी का कार्य किया जाता है। उस्ता कला के नाम से प्रसिद्ध यह कला का एक अनुपम उदाहरण है। ऊँट के चमड़े से निर्मित कुप्पियों, शीशियों, मिट्टी की सुराही, डिब्बों आदि पर सोने की नक्काशी उपरांत मोहक बनी इन वस्तुएं के महंगे दाम होने के बावजूद पर्यटकों द्वारा इन्हें रूचि के साथ खरीद जाता हैं। विभिन्न राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय अवसरों पर ऊँट की खाल से निर्मित वस्तुओं यथा– कुप्पियां, सुराहियाँ, टेबल लैंप एवं आभूषणों के रूप में प्रदर्शित किया जाता है। जहां लोग इन अनूठे उत्पादों के मुरीद हो जाते हैं।

उस्ता कला के नायाब नमूनें

उष्ट्र हड्डी से बने उत्पाद : कुटीर उद्योग के रूप में ऊँट की हड्डियाँ अपना विशेष महत्व रखती हैं। अन्य पशुओं की तुलना में ऊँट की हड्डी अधिक लम्बी, मोटी व चौड़ी होती है। अतः इस पर अधिक कलात्मक कारीगरी (कार्विंग वर्क) की जा सकती है। राजस्थान में अनेकों कारीगर गृह सज्जा के अनेकानेक कलात्मक आभूषण जैसे स्त्रियों के पहनने के लिये हाथ के कड़े, कान के लिए टॉप्स तथा शारीरिक शृँगार की विविध वस्तुएं बना रहे हैं जिनकी देश व विदेश में बेहद माँग भी हैं। यदि सरकार इस हस्त कला व इससे जुड़े कलाकारों को प्रोत्साहन दें तो विदेशी मुद्रा और पर्यटन में आशातीत वृद्धि की संभावनाएँ हैं। साथ ही हाथी दांत से बने उत्पादों की निषिद्धता को देखते हुए उष्ट्र हड्डी से बने उत्पाद किफायती व बेहतर व्यवसायिक विकल्प है। उष्ट्र की हड्डियाँ अन्य पशुओं की तुलना में मुलायम होती हैं। अतः उन पर कठिन आकृति बनाना आसान होता है।

ऊँट के प्रतिमान : ऊँट के प्रतिमान काठ, धातु व मिट्टी से बनाये जाते हैं फिर इन्हें रंग कर सजाया जाता है। यह पर्यटकों में बहुत लोकप्रिय हैं, जो कि घर व प्रतिष्ठानों को सजाने के लिए इस्तेमाल में लाये जाते हैं। इन्हें मांगलिक अवसरों पर भेंट के रूप में भी दिया जाता हैं।

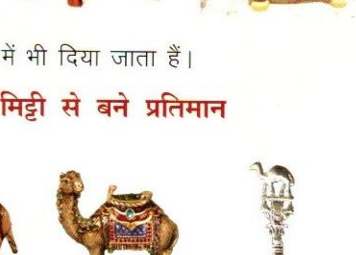

उष्ट्र रूप में बने काठ एवं धातु व मिट्टी से बने प्रतिमान

ऊँट की आकृति में हत्था–छड़ी

ऊँट आकृति में कान की बालियां

उष्ट्र चिहिन्त क्षेत्र के लिए

ऊँट के लोगो युक्त टोपी

ऊँट की आकृति में चम्मच का हत्था

ऊँट की ऊन कल्पन द्वारा सजावट : पशु मेलों में ऊँटों को सजाने का एक नायाब तरीका उसके बालो को कतरकर उसके शरीर पर कई तरह की कला कृतियाँ बनाई जाती हैं, ऐसे सजे हुए ऊँटों को देखने व उनके साथ तस्वीरें खींचाने के लिए पर्यटक उत्सुक रहते हैं।

कठिनाइयाँ : एक ऊँट को सजाने के लिए लगभग 2 माह का समय लग जाता है, ऐसे में पशु को लम्बे समय तक प्रतिदिन बाँध कर रखा जाता है ताकि उसके शरीर पर कला कृतियों को उकेरा जा सके जिससे उनके पोषण प्रबंधन पर प्रभाव पड़ता है।

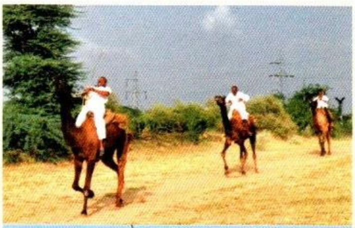

ऊँट दौड़ प्रतियोगिता : ऊँट दौड़ प्रतियोगिता एक बहुत ही लोकप्रिय खेल एवं मनोरंजन का साधन बनता जा रहा है। कुछ ऊँट पालक अपने ऊँटो को विशेष प्रशिक्षण देते हैं ताकि उनके पशु मैदान में तेज गति से दौड़ सकें।

उष्ट्र पोलो : प्राचीन समय में उष्ट्र पोलो एक राजसी खेल माना जाता था परन्तु आमजन में इसकी लोकप्रियता के कारण यह आज भी उतनी ही उत्सुकता से देखा जाता है।

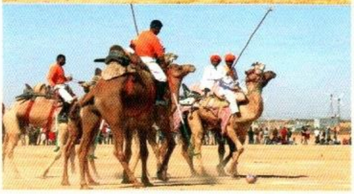

ऊँटों पर पोलो खेलते हुए खिलाड़ी

ऊँट नृत्य : यह बहुत ही लोकप्रिय मनोरंजन का साधन है। पूर्व में भी मेलों आदि में यह आकर्षण का केन्द्र बना रहता था। दर्शक ऊँट के करतबों का भरपूर आनंद लेते हैं। ऊँट को नृत्य हेतु विशेष प्रशिक्षण देने में लगभग एक वर्ष लगता है। कई ऊँटों के अभ्यास के दौरान उनमें से कोई एक ऊँट नृत्य में पारंगत हो पाता है। ऊँट पालक इसे कमाई का एक अच्छा साधन बना सकते हैं। क्योंकि शादी–समारोह आदि में उष्ट्र नृत्य का दिन–ब–दिन प्रचलन बढ़ रहा है।

ऊँट को नृत्य सिखाना भी एक कला है : पर्यटन हेतु प्रायः दो से तीन वर्ष की आयु में ऊँट को नृत्य करना सिखाया जाता है। सिखाने में 6–8 माह लग जाते हैं। सीखने के पश्चात यह कमाई का अच्छा साधन हो सकता है।

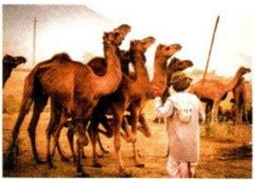

समुद्र किनारे ऊँट पर सैर : आजकल पर्यटन से जुड़े विविध आयामों में ऊँट का प्रयोग भी बढ़ने लगा है जैसे कि समुद्र किनारे ऊँट पर सैर, पर्यटकों को खासा लुभाती है। हर उम्र के लोग समुद्र किनारे इस विशालकाय अनूठे प्राणी की सवारी करने को उत्सुक रहते हैं क्योंकि यह प्रकृति के साथ जुड़ाव का एक विहंगम दृश्य प्रस्तुत करती है। फलतः पर्यटक के चित्त में यह सैर किसी स्थायी आनंद की भांति जीवन पर्यन्त विद्यमान रहती है।

कठिनाइयाँ : सनुद्र का किनारा नमी वाला क्षेत्र होने पर भी पशु को लम्बे समय के लिए पर्यटन प्रयोजन हेतु तैयार रखना

पड़ता है। ऐसे में ऊँट के उचित रखरखाव, विश्राम एवं पोषण की तरफ अकसर ध्यान ही नहीं दिया जाता है। यदि इस ओर पर्याप्त ध्यान दिया जाए तो पशु, सवारी कार्य में जल्दी नहीं थकेंगे और उष्ट्र पालक अधिक आमदनी भी प्राप्त कर सकेंगे।

दो कूबड़ वाले ऊँट की सवारी : भारत के उत्तर–पश्चिम के लद्दाख में दो कूबड़ वाले ऊँट पाए जाते हैं। लद्दाख जो कि एक ठंडा रेगिस्तानी इलाका है, यह प्रायः साल के आठ महीने बर्फ से ढका रहता है। यहां के बाशिंदे दो कूबड़ वाले ऊँटों का उपयोग विशेषकर पर्यटन की दृष्टि से ही करते हैं। पर्यटक मुख्यतया सितम्बर से अक्टूबर तक यहाँ आते हैं और सवारी का आनंद लेते हैं। करीब डेढ़ दशक पहले ये ऊँट अत्यंत सीमित संख्या (करीब 50–55) में थे। भाकृअनुप–राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र के संपर्क में आने से इन उष्ट्र पालकों को वैज्ञानिक तरीके से ऊँटों के प्रबन्धन की जानकारी दी गई, नतीजतन आज ये अच्छी खासी संख्या (लगभग 200 से अधिक) में उपलब्ध हैं।

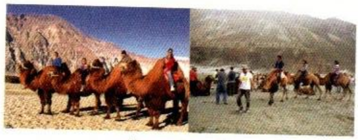

दो कूबड़ीय ऊँट

उष्ट्र त्यौहार/महोत्सव : अंतर्राष्ट्रीय ऊँट महोत्सव, बीकानेर में हर साल जनवरी के महीने में पर्यटन विभाग द्वारा आयोजित किया जाता है। अंतर्राष्ट्रीय ऊँट महोत्सव अकेले 5 लाख से ज्यादा आगंतुकों को आकर्षित करता है जिसमें ऊँटों से जुड़ी विभिन्न गतिविधियां यथा–उष्ट्र दौड़, उष्ट्र नृत्य, ऊँटनी के दूध दूहनी की प्रतियोगिता, श्रेष्ठ उष्ट्र नस्ल एवं कैमल सफारी आदि दर्शकों को रोमांचित करती हैं।

अंतर्राष्ट्रीय उष्ट्र उत्सव का दृश्य

इसके अतिरिक्त राजस्थान में कई स्थानों पर भव्य एवं स्थानीय मेलों आदि का आयोजन किया जाता है। इन मेलों का पर्यटन की दृष्टि से विश्लेषण किया जाए तो पाएंगे कि ऊँट इनमें महत्ती भूमिका निभाते हैं।

जैसलमेर के सम गाँव में 'डेजर्ट फेस्टिवल' मनाया जाता है। इस उत्सव मे भी मुख्य आकर्षण धोरों पर ऊँट की सवारी होती है, लगभग 1.5 से 2 लाख पर्यटक हर वर्ष इस उत्सव मे आनंद लेते हैं। वैसे भी जैसलमेर में सैंकड़ों पर्यटक प्रति वर्ष भ्रमण हेतु आते हैं, जहां न केवल वे राजस्थानी संस्कृति की झलक पाकर मुग्ध हो उठते हैं अपितु रेतीले धोरो पर ऊँटों पर सवारी उनका मन मोह लेती है।

डेजर्ट फेस्टिवल का आनन्द लेते पर्यटक

पुष्कर मेला जिसे 'पुष्कर ऊँट मेला' या स्थानीय रूप से 'कार्तिक मेला' भी कहा जाता है। यह पुष्कर (राजस्थान, भारत) में आयोजित एक बहु–दिव्य पशुधन मेला और साँस्कृतिक भाग है। यह मेला हिंदू कैलेंडर कार्तिक मास के महीने के साथ शुरू होता है और कार्तिक पूर्णिमा पर समाप्त होता है, जो कि अक्टूबर के अंत और नवंबर के आरंभ में मनाया जाता है। पुष्कर मेला अकेले 2 लाख से ज्यादा आगंतुकों को आकर्षित करता है।

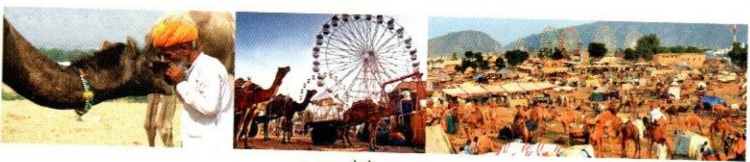

पुष्कर मेले का दृश्य

गुजरात में कच्छ के रण में 'रण उत्सव' के नाम से मनाया जाता है जिसमे लाखों की संख्या में देशी व विदेशी पर्यटक भाग लेते हैं।

रण उत्सव में ऊँट सवारी करते पर्यटक

ऊँट सवारी का आनंद लेते हुए पर्यटक

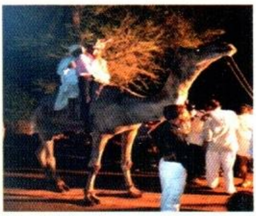

शादी समारोह में ऊँट का उपयोग : मरू प्रदेश के ग्रामीण अंचलों में ऊँट का उपयोग विवाह जैसे पवित्र अवसरों पर करते हैं। इसमें परिवार के सदस्य ऊँट गाड़ी पर दूर–दूर तक जाते है व कई रस्मों में ऊँट को उपयोग में लेते हैं।

लोक गाथाओं में ऊँट से जुड़े प्रसंग : ढोलामारू के नाम से प्रसिद्द पौराणिक गाथाओं पर आधारित ऊँट पर बैठे जोड़े की तस्वीरें काफी लोकप्रिय हैं जिसे पर्यटक अकसर राजस्थान की यादगार के तौर पर अपने साथ ले जाते हैं। इसके अतिरिक्त धातु से बने एकल ऊँट और ढोलामारू जोड़ी के साथ भी लोकप्रिय हैं जिन्हें घरों में सजाने के लिए काम में लिया जाता है।

पशु पालन सम्बंधित पर्यटन में चुनौतियाँ

1. पशु का सम्बंधित कार्य के लिए प्रशिक्षण।
2. सजाने हेतु सामग्री की उपलब्धता।
3. कार्य स्थान पर चारा, पानी, सुरक्षा, दवाई आदि की व्यवस्था।

उष्ट्र पर्यटन व्यवसाय अपनाने में कठिनाइयाँ

1. सफल पर्यटन और उपभोक्ता बाजार कार्य के लिए पशु पालन का ज्ञान अति आवश्यक।
2. अपनी व दूसरों की गलतियों से सीखना आवश्यक।
3. व्यवसाय सम्बंधित युक्तियों को जानना।
4. पर्यटन के लिए ऊँट का उपयोग मुख्यतया सर्दी के समय अक्टूबर से मार्च माह तक किया जाता है। वर्ष के शेष समय में ऊँट पालकों को आजीविका के लिए अन्य साधनों की तलाश करनी पड़ती है।

पर्यटन व्यवसाय कार्य संभालने की क्षमता

1. कार्य में निपुणता व कार्य की सम्पन्नता।
2. पर्यटकों का विश्वास जीतना।
3. व्यवसाय सम्बंधित युक्तियों का जानना।

निष्कर्ष : भारत में पर्यटन व्यवसाय प्रगति की दिशा में बढ़ रहा है। पर्यटन की बढती मांग को देखते हुए इस व्यवसाय के नये–नये आयाम विकसित होने लगे हैं। पर्यावरणीय पर्यटन के लिए उष्ट्र एक महत्वपूर्ण व्यावसायिक जरिया हो सकता है। विशेषकर इस पशु का मरु क्षेत्र की पारिस्थितिकी में एक विशेष योगदान है। अपनी मस्त चाल से ऊँट हर पर्यटक का मन मोह लेता है। ऊँट के शरीर से जुड़ी हर वस्तु जैसे चमड़ी, हड्डी, मींगणी, दूध इत्यादि व्यावसायिक रूप में अपनाने के लिए मूल्यवान सिद्ध हुई है। ऊँट पालक इन महत्वपूर्ण पदार्थों को व्यवसाय हेतु अपनाकर आर्थिक लाभ ले सकते हैं और उष्ट्र प्रजाति का संरक्षण करने में भी अपना अहम योगदान दे सकते हैं कठिनाई हर व्यवसाय का अभिन्न अंग है, परन्तु हम उन कठिनाइयों को सकारात्मक सोच के माध्यम से कम कर सकते हैं।

प्रकाशित

निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसन्धान केन्द्र, पोस्ट बैग 07, जोड़बीड़ बीकानेर, राजस्थान, दूरभाष: 0151-2230183, फैक्स: 0151-2970 153

ई-मेल : nrccamel@nic.in, वेबसाईट : www.nrccamel@icar.gov.in